

पुस्तक समीक्षा

मेघों के देश में

*मनीष कुमार उपाध्याय

*शोधार्थी, हिन्दी विभाग, नेहू, शिलांग - 793022

ईमेल-manish910999@gmail.com, मो. 7903788017

Received: January 6, 2026

Accepted: February 18, 2026

शोध सार

मेघों के देश में' (मेघालय की यात्रा-कथा) डॉ. साँवरमल सांगानेरिया द्वारा लिखित एक उत्कृष्ट यात्रा-वृत्तान्त है। यह पुस्तक मेघालय की प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध संस्कृति और जनजातीय जीवन शैली का सजीव और प्रामाणिक चित्रण प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने हमारी उन तमाम धारणाओं-पूर्वाग्रहों को दूर करने का प्रयास किया है जो वर्षों से हम जनश्रुति के आधार पर ग्रहण किये थे। यह यात्रा-वृत्तान्त आधुनिक युग की व्यस्त जीवन शैली को ध्यान में रख कर लिखी गयी है। जो व्यक्ति अपनी सारी चिंताओं, तनाव को प्रकृति की गोद में जाकर वह कुछ समय तक वह सारी समस्याओं को दरकिनार कर उससे गुप्तगुं कर सके। लेखक जब दृश्यों का वर्णन करते हैं तो वह ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे हम भी उनके साथ-साथ यात्रा कर रहे हैं। सभी का इतनी सजीवता से व्याख्या करते हैं कि कोई भी व्यक्ति मानसिक यात्रा के आधार पर इन मनोरम दृश्यों को हृदयंगम करते हुए बादलों के घेरे में खो जाने को स्वतः तैयार हो जायेगा। यह तीन खंडों में लिखा गया है। इसके पहले खण्ड का शीर्षक खासी पहाड़ खण्ड है, जिसमें छोटे-छोटे पाठ के माध्यम से लेखक यहाँ की बात करता है यह कुल 29 हैं। इसके द्वितीय खण्ड का शीर्षक जयंतियाँ पहाड़ खण्ड है, जिसमें कुल 9 पाठ हैं व इसके तीसरे खण्ड का नाम गारो पहाड़ खण्ड है जिसमें कुल 8 पाठ हैं।

बीज शब्द : यात्रा-वृत्तान्त, जनजातीय जीवन शैली, प्राकृतिक सुंदरता, लोककथा, मातृसत्ता प्रधान।

मेघों के देश में' (मेघालय की यात्रा-कथा) डॉ. साँवरमल सांगानेरिया द्वारा लिखित एक उत्कृष्ट यात्रा-वृत्तान्त है। यह पुस्तक मेघालय की प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध संस्कृति और जनजातीय जीवन शैली का सजीव और

प्रामाणिक चित्रण प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने हमारी उन तमाम धारणाओं-पूर्वाग्रहों को दूर करने का प्रयास किया है जो वर्षों से हम जनश्रुति के आधार पर ग्रहण किये थे। यह यात्रा-वृत्तांत आधुनिक युग की व्यस्त जीवन शैली को ध्यान में रख कर लिखी गयी है। जो व्यक्ति अपनी सारी चिंताओं, तनाव को प्रकृति की गोद में जाकर वह कुछ समय तक वह सारी समस्याओं को दरकिनार कर उससे गुप्तगूं कर सके। लेखक जब दृश्यों का वर्णन करते हैं तो वह ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे हम भी उनके साथ-साथ यात्रा कर रहे हैं। सभी का इतनी सजीवता से व्याख्या करते हैं कि कोई भी व्यक्ति मानसिक यात्रा के आधार पर इन मनोरम दृश्यों को हृदयंगम करते हुए बादलों के घेरे में खो जाने को स्वतः तैयार हो जायेगा। यह तीन खंडों में लिखा गया है। इसके पहले खण्ड का शीर्षक खासी पहाड़ खण्ड है, जिसमें छोटे-छोटे पाठ के माध्यम से लेखक यहाँ की बात करता है यह कुल 29 हैं। इसके द्वितीय खण्ड का शीर्षक जयंतियाँ पहाड़ खण्ड है, जिसमें कुल 9 पाठ हैं व इसके तीसरे खण्ड का नाम गारो पहाड़ खण्ड है जिसमें कुल 8 पाठ हैं। इन सभी पाठों को पढ़ने के पश्चात आप सही रूप में इस क्षेत्र की महत्ता को जान सकते हैं और बहुत कुछ इनसे सीख सकते हैं। इस पुस्तक में इतिहास व लोककथा का समिश्रण कर ऐसा सुंदर कलेवर तैयार किया गया है जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम होगी। इसमें मेघालय राज्य किस प्रकार बना तथा जब यह असम का हिस्सा था तो किस हाल में था। “पुरानेजमानेमेंमेघालयमेंबसनेवाली खासी, जयंतियाँ और गारो जनजातियों का दक्षिण में पूर्वी बंगाल आज का बांग्लादेश से और उत्तर में असम से व्यापार चला करता था। असम में आहोमों का राज्य था। सन् 1821 में बर्मियों ने असम पर आक्रमण कर असहनीय अत्याचार किया। आहोम राजा चन्द्रकान्त सिंह (1811-21) ने उनसे निपटने के लिए ब्रिटिशों की सहायता ली। आखिर बर्मी हमलावरों को तो खदेड़ दिया गया परंतु स्वयं अंग्रेजों ने बर्मा के यांडबू में बर्मियों से 24 फरवरी, 1826 को संधि कर असम के बड़े भूभाग पर अपना अधिकार जमा लिया।”समस्त पूर्वोत्तर बाह्य आक्रांताओं की चोट को सहते हुए किस प्रकार अपनी शक्ति का लोहा मनवाते हैं, यह हमें देखने को मिलता है। 21 जनवरी, 1972 को मेघालय को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला। जिसमें असम के गारो, जयंतियाँ और खासी जिले मिला दिये गए। यहाँ का बड़ा बाजार जो अपनी व्यस्तता के लिए जाना जाता है। जिसेमें खासी भाषा में खिडाई लाड कहते हैं। बड़े स्तर पर यहाँ हर प्रकार का माँस मिलता है। दुनियाँ की तमाम वस्तुएँ मिलतीहैं। क्वाई, तिम्पऊ और डूमा की लोककथा में हमने सच्ची दोस्ती व अमीरी-गरीबी के फर्क व नीतिपूर्ण बातें सिखने को मिलीं, जो यहाँ के रिवाज में प्रचलित होकर हर किसी के दैनिक जीवन का हिस्सा आज के समय में हो गया है। ‘सोह पेत ब्नेड्’ पर्वत जो सेंग खासी जनजाति का पवित्र स्थल है। खासी समाज में मुर्गा का क्या महत्त्व है यह हमें लामेत-लाताङ् जुक का मुर्गा लोककथा में जानने को मिला कि किस प्रकार इसने यहाँ कि संस्कृति में अपना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया और आज भी यह इन सभी के लिए पूजनीय है। जो ईसाई नहीं बने हैं उनका दाह संस्कार किस विधि से होता है यह भी हमें जानने को मिला कि जो पुजारी होतेहैं, उसे खासी भाषा में ‘लिङ्डोह’ कहते हैं। ‘नॉगक्रेम’ उत्सव जिसमें खासी आस्था

के अनुसार राजा के आराध्य कुलदेवता की पूजा से उत्सव की शुरुआत होती है। खासी लोग प्रकृति उपासना में विश्वास रखते हैं। यहाँ विश्वकर्मा पूजा भी धूम-धाम से मनायी जाती है। इसमें कुलदेवता को खुश करने के लिए मुर्गे की बलि दी जाती है। शिलांग जिसका नाम यहाँ के 'उ शल्लोङ् देव' के नाम पर पड़ा जिसे लीर की लोककथा में जानने को मिला। खासी जनजाति मातृसत्ता प्रधान है। और सबसे छोटी लड़की इनका संपत्ति पर अधिकार होता है, यहाँ घर जमाई बनकर रहने की प्रथा है। मावसीनराम में स्वयंभू शिवलिंग है जहाँ पहले श्रद्धालु कावड़ लेकर जाते थे पर बढ़ती ईसाईयत के कारण जब से यहाँ की ज्यादा आबादी ने अपना धर्म बदल लिया है, उन्होंने इस स्थल पर पूजा-पाठ करने की मनाही कर दी है। स्वतन्त्रता सेनानी 'उ तिरोत सिंह' जिन्होंने अपने अंतिम समय तक अंग्रेजों की दासता स्वीकार नहीं की। धूर्तता से समझौते के नाम पर पकड़ कर इन्हें ढाका जेल भेज दिया गया जहाँ निर्वासित जीवन व्यतीत करते हुए सन् 1834 में इनकी मृत्यु हो जाती है। चेरापूँजी जो विश्व में सर्वाधिक बारिश के लिए विख्यात है। इसका दूसरा नाम सोहरा है जो खासी भाषा में सोह माने फल और रा का अर्थ है – रखना। किसी जमाने में यहाँ आसपास के वनों में पैदा होनेवाले संतरा फल लाकर रखे जाते थे, इसे ही सोहरा कहा जाने लगा। नोह का लीकाइ कथा में लिकाइ के साथ हुई क्रूरता को दर्शाता है जिसके दुःख में वह उमयङ् झरने में कूद गई। इसी के नाम पर इसका नाम नोह का लिकाइ पड़ा। खासी पहाड़ पर मुगल आक्रमण होने पर मीरजुमला के नेतृत्व में मुगल सेना की चारों ओर से शिकस्त खानी पड़ी। इशामती में केतकी महाराजा के प्रशंसनीय कार्य राम कृष्ण मिशन को स्थापित करते हुए किया। मिशनरी के लाख दबाव पर भी वो टस-से-मस न हुए और न ही उनके प्रलोभन में आए।

शेला नदी भारत-पाक बंटवारे के पहले बांग्ला देश के सुनामगंज,छातक तक जाती थी जो यहाँ शेला बाजार से खासी पहाड़ की उपज चूनापत्थर, पान-सुपारी, तेजपत्ता आदि छातक जाया करते थे। और छातक से चावल-दाल, कपड़ा, तेल,नमक, चीनी-गुड़ आदि शेला बाजार बिकने आते थे। पर आज के समय में यहाँ से केवल चूना पत्थर और कोयला ही जाता है। परंतु वहाँ से कुछ भी बिकने नहीं आता। अंतर्राष्ट्रीय हाटबाजार जो बांग्लादेश की सीमा से सटे हैं। यहाँ सीमा खुली होने पर बढ़ती समस्याएँ जैसे बढ़ता घुसपैठ, चोरी, तस्करी आदि हैं। सबसे प्रमुख समस्या बाँग्ला देशी युवक यहाँ के बाजार में घूमने आते हैं और जनजातीय भोलीभाली युवतियों को बातों के मकड़जाल में फँसा कर बांग्लादेश ले जाते हैं। फिर उनका धर्मांतरणकर हर प्रकार से शोषण करते हैं। शिलांग से 70 किलोमीटर दूर बांग्लादेश की सीमा से सटीदावकी उमगोटनदी है जहाँ भारत के हिस्से को दावकी और बांग्लादेश के भाग को तामाबील कहते हैं। “मेघालयकीखदानोंसेनिकाले गए कोयले से भरे ट्रक बांग्लादेश जातेहैं। दावकी दोनों देशों के बीच एक व्यस्त अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मार्ग है। खासी भाषा के प्रमुख कवि सोसोथाम,अमजद अली,निहीन सिंह वाह्लांग, प्रिमरोज गैट पोह आदि है। जयंतियाँ जो मेघालय की दूसरी बड़ी जनजाति है जो जयंतियापहाड़ पर निवास करती है। इनकीआय का मुख्य स्रोत शिमला मिर्च, अनन्नास आलू-ताम्बूल आदि की उपज पर निर्भर है।

मावबन्ना जिसे पत्थरों का बगीचा भी कहा जाता है जिसे अपने पूर्वजों अथवा विशेष घटना की स्मृति में इन्हें जमीन पर खड़ा गाड़ते हैं। जो उनके प्रति प्रेम को दर्शाता है। इसे स्मृति-स्थल भी कहा जा सकता है। जयंतिया लोककथा में जयंतिया अपने को प्नार कहते हैं जो नदी पुत्री लिङ्गोहरवा और रन्दि के प्रेम पर आधारित है जिनसे दो-बेटियाँ हुई उन्हीं के वंशज खुद को मानते हैं। क्रांतिकारी कियांग नांगबाह जिन्होंने अपनी वीरता का लोहा अंग्रेजों को मनवाया था। इन्हें एक देश द्रोही दोलोई तिङ्गकान इसे मेघालय की मीर जाफ़र भी कहा जाता है। इन्होंने धोखे से 27 दिसम्बर, 1862 को गिरफ्तार करा दिया। जिन्हें अंग्रेजों ने जोवाई में 30 दिसम्बर, 1826 को फाँसी पर लटका दिया। जोवाई से 25-30 किलोमीटर की दूर पर कोयला खदानों का सिलसिला शुरू हो जाता है, जहाँ मनमानेतौर से वैज्ञानिक तरीके से मजदूरों को बिना सुरक्षा प्रदान किये बगैर कोयला खनन किया जाता है। इस काम में बड़ी संख्या में बाल मजदूर भी लगे हुए हैं। यह पूरा सिडिकेंट सरकार में बैठे कुछ लोगों की मदद से फल-फूल रहा है। सब बातें जान कर भी राज्य सरकार कुछ कर पाने में उतना सक्षम नहीं है क्योंकि उसे सालाना 700 करोड़ का राजस्व प्राप्त होता है सारी चोरी -चकारी के बाद भी। मेघालय में कोयला होने का पता सर्वप्रथम सन् 1815 में एक ब्रिटिश ऑफिसर स्टार्क को लगा। यहाँ से कोयला गुवाहाटी, त्रिपुरा के साथ बांग्लादेश तक नकली चालान के जरिये भेजा जाता है। गारोयहाँ की तीसरी बड़ी जनजातियों में से एक है। जो गारो पहाड़ पर निवास करती है। राभा जनजाति मुख्यता असम के ग्वालपाड़ा जिले में, मेघालय के गारो पहाड़ पर तथा पश्चिम बंगाल के उत्तरी भाग में रहती है। प्रकृति प्रेमी राभा जनजाति को पर्वतों के आस-पास, नदियों के किनारे गाँव बसाकर रहना ही ज्यादा पसंद है। यहाँ की महिलाएं वस्त्रकला में अति निपुण हैं, जो स्वयं येवस्त्र बुनती हैं। ये हिन्दू धर्म को मानते हैं। और देवी पूजा में विश्वास करते हुए कामाख्या देवी पर विशेष श्रद्धा रखते हैं। ग्वालपड़िया गायिका प्रतिमा बरुवा पांडे जी ने ग्वालपड़िया लोक गीतों में अपनी कृति स्थापित की है। गारो पहाड़ पर मुगल सेना ने आक्रमण किया पर भौगोलिक क्षेत्र व गारो निवासी लोगों की सूझ-बूझ से उन्हें चारों ओर से मुँह की खानी पड़ी। इस सेना का नेतृत्व इखित्यारुद्दीन मलिक उजबेग कर रहा था। इस स्थल पर छोटी-छोटी गुफाएँ हैं, जिनमें ध्यानस्थ होकर योगी अपनी तप-साधना किया करते थे। बोड़ो समूह से निकली गारो भाषा मांदे कुसिक अर्थात् मनुष्यों की भाषा अथवा आरुचिक कुसिक अथवा पर्वतीय लोगों की भाषा कहलाती है। मानकाचर में बढ़ते बांग्लादेशी मुसलमानों के कारण यहाँ से मारवाड़ी परिवारों ने अपने व्यापार धुबरी, बरपेटा रोड आदि शहरों में कर लिये हैं। गारो पहाड़ पर गारो जनजाति के अलावा कोच, हाजोंग और राभा जनजातियाँ भी उतने ही प्राचीन काल से रहती है, जबसे यहाँ गारो रह रहे हैं। ये हिन्दू धर्म को मानते हैं तथा इनकी जीविका का मुख्य आधार फसल उत्पादन, मछली पकड़ना, शिकार करना है। इस पुस्तक को आम पाठक को ध्यान में रखते हुए सरल व रोचक शैली में गद्य के रूप में लिखा गया है जो पाठक को किसी प्रकार के ऊबने से बचाती है। कहीं-कहीं पर दोहराव हुआ है। जैसे- पृष्ठ संख्या 135, 140 कोयला खदान तथा हिन्दी भाषा को लेकर मेघालय में स्थिति आदि। प्रकाशन इसका उत्कृष्ट हुआ है और पृष्ठ अच्छे

है पर थोड़े और अच्छे हल्के वाले पृष्ठ का उपयोग करने से इसकी गुणवत्ता और अच्छी हो सकती है। मूल्य भी इसका सामग्री के अनुरूप सही है जो मात्र 260 रुपए में आपको सम्पूर्ण मेघालय की मानसिक यात्रा करा दे। लेखक का यह प्रयास यात्रा-वृत्तांत परंपरा को जीवंत रखने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुआ है। अतः यह पुस्तक अपने सभी लेखकीय शर्तों को पूर्ण करते हुए दृश्यों का समायोजन करते हुए खरी उतरी है।

प्रकाशन विवरण :

पुस्तक का नाम : मेघों के देश में

लेखक का नाम : डॉ. साँवरमलसांगानेरिया

प्रकाशन : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, बसंत कुंज, नई दिल्ली- 110070 द्वारा प्रकाशित

प्रकाशन वर्ष : 2020

संस्करण : पहला संस्करण

आईएसबीएन (ISBN) : ISBN 978-81-237-9251

मूल्य : 260

पृष्ठ संख्या : 178

